WitWaves
Journal of Multidisciplinary Research

International Peer-Reviewed E-Journal
E-ISSN: 3107-4235

Vol – 3
Issue – 3
Jul-Sep
2026

# हरदान हर्ष की कहानियों में चित्रित मानवीय संवेदनाओं का विशिष्ट अध्ययन

**ओम प्रकाश असवाल[1, *], डॉ.ऋतु शर्मा[2]**

[1]शोधार्थी-हिंदी विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर
[2]सहायक प्राध्यापक-हिंदी विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर

https://doi.org/10.64175/wjmr.vol.3.issue3.3

Article Info

***Keywords:***

- *अभिव्यक्त*
- *काव्यमय*
- *हृदयग्राही*
- *यथार्थपरक*
- *समसामयिक*

Abstract

हरदान हर्ष की कहानियां संवेदनशील, मार्मिक एवं यथार्थपरक होती हैं जो मन को गहरे तक छू जाती हैं। कहानियों की भाषा शैली, भावों की उत्कृष्टता, घटनाओं के प्रस्तुतीकरण की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति कहानियों को हृदयग्राही और मर्मस्पर्शी बनाती हैं। कहानियों की काव्यमय भाषा उन्हें रोचक और पठनीय बनाती हैं।

हरदान हर्ष की कहानियों का बंगला, तेलुगू, कन्नड़, उड़िया आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ है। आपके कहानी संग्रह आम भारतीय जन के जीवन की कहानी को अनेक आयामों में अभिव्यक्त करते हैं। उन्होंने समकालीन सामाजिक विसंगतियों और मानवीय संवेदनाओं को केंद्र में रखकर सशक्त कहानियाँ लिखी हैं। उनके प्रमुख कहानी संग्रहों में 'पिघलते हिमखंड' और 'अपने ही खुदा' बहुत लोकप्रिय हुए है।

## भूमिका

डॉ.हरदान हर्ष हिंदी और राजस्थानी साहित्य के एक अत्यंत प्रतिष्ठित, बहुआयामी कवि, कथाकार और विद्वान हैं। उनका जन्म वर्ष 1952 में हुआ और उन्होंने अब तक 144 से अधिक साहित्यिक कृतियों की रचना कर साहित्य जगत में एक अनूठा कीर्तिमान स्थापित किया है। उन्होंने न केवल रचनात्मक गद्य और पद्य लिखे, बल्कि भाषाई व्याकरण, इतिहास और सांस्कृतिक अनुसंधान के क्षेत्र में भी अमूल्य प्रदेय अर्थात योगदान दिया है। हर्ष जी की अपनी लेखन दृष्टि एवं सृष्टि है। वे जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों को खासकर ग्रामीण जीवन के अनुभवों को अपनी कहानी के कथानक के रूप में स्वीकार करते हैं।

## शोध विस्तार

यथार्थ परिवेश में मानव जीवन की अभिव्यक्ति बनकर, मनुष्य की आंतरिकता का अन्वेषण करके, मानवता की प्रतिष्ठा तथा मानव मूल्य की मर्यादा निश्चित करता है। इस विधा में लेखक ने अपने विचारों को बड़ी आसानी से समझाने की कोशिश की है, ताकि आम व्यक्ति भी इन विचारों को समझ सके। यह साहित्यक काव्य रचना पाठक वर्ग को अधिक प्रभावित करती हैं, क्योंकि ये उपन्यास समाज से जुड़े होते हैं और समाज मनुष्यों से बनता है इसलिए यह मानव हृदय के अत्यधिक निकट है।

रत्नकुमार सांभरिया 'पिघलते हिमखण्ड' पर अपनी टिप्पणी करते हुए लिखते हैं-"कहानी संग्रह 'पिघलते हिमखण्ड' आश्वस्त करता है कि कहानी विधा पर भी उनकी बराबर पकड़ है। संग्रह की कहानियां वागर्थ, कथादेश, साक्षात्कार, इन्द्रप्रस्थ भारती, अक्षर-पर्व, हस्ताक्षर, राजस्थान पत्रिका, इतवारी पत्रिका आदि में प्रकाशित हैं। इन कहानियों में घर-परिवार, पड़ोस, गाँव-शहर, संबंध, अलगाव तथा समसामयिक और अतीत को पाठकों से रूबरू कराने का प्रयत्न किया गया है।"[1]

लेखक की स्वयं अपने कहानी पिघलते खण्ड' में स्वीकारोक्ति की है -"मैं गांव-ढाणी का आदमी नगरों-महानगरों से गुजरता तेजी से बदलते माहौल का एक गवाह हूं। अपनी जीवन-यात्रा के विगत छह दशक में जो कुछ मैंने देखा, सुना, गुना, अनुभव किया वही गवाह रूपी कहानीकार ने इस संग्रह की कहानियों में टुकड़े-टुकड़े कुछेक दास्तान कही हैं। बतौर एक कहानीकार मंथनरत गवाह के सामने अहं प्रश्न 'वह आज कहाँ खड़ा है?' के उत्तर से बेहतर

इसका कथानक जीवन के अनेक अनुभवों से बुना गया है। वर्तमान समाज की मानसिकता और परिवार मुख्य रूप से युवा वर्ग की उपभोक्तावादी मनोवृत्ति की ओर भी लेखक ने संकेत किया है। कहानीकार ने इस संग्रह की कहानियों में विभिन्न कथानकों को बताया हैं। बतौर एक कहानीकार मंथनरत गवाह के सामने अहं प्रश्न 'वह आज कहाँ खड़ा है?' के उत्तर से बेहतर इस कहानी-संग्रह का आमुख नहीं हो सकता।

'मांगपत्र' कहानी वस्तुतः स्वार्थवृत्ति को उद्घाटित करने वाली कहानी है, "इसका मतलब चाचा एक मंजा हुआ बहुरूपिया निकला। शादी के अवसर पर निवेश कर उसने मुझे बौना बना दिया। भावनाओं के खूंटे से बाँधकर उसने मेरे गले रस्सी डाल दी। मैं? मेरा वजूद ? एक पालतू बैल जो जीवन भर उसके गृहस्थ की गाड़ी को खींचता रहेगा। बलि का बकरा। कसाई बकरे को खूब अच्छा-अच्छा इसलिए खिलाता है कि उसका गोश्त बढ़ जाएगा और हलाल करने पर अच्छी खासी कीमत मिल जायेगी। मैं और बलि का बकरा?"[2]

'धर्मयुद्ध' कहानी ग्रामीण परिवेश के जमीन आदि पर अधिकार करने के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई कहानी है,"मेरी लाठी हवा को चीरते हुए, गति में आ गई थी। मैंने ललकारा, 'इस धर्मयुद्ध में मैं न्याय का साथी हूँ।' पिताजी और भैय्या के चेहरे पीले पड़ गए थे। मेरी लाठी उन्हें शहतूत के पेड़ के पार धकेल चुकी थी।"[3]

'आँखों से चिपका चेहरा' कहानी में महानगरीय युवाओं की यथार्थ स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। गाँव छोड़कर युवाओं का शहर की ओर पलायन हो रहा है,परन्तु वे वहां बुरे व्यसनों से ग्रसित हो रहे हैं, लेखक इसी सामयिक चिंता को प्रस्तुत कहानी में मुखरित करने का प्रयास करते हैं,"अरे, यह तो सचमुच गिर गया। दुपहर की तेज धूप, शराब का नशा और लूटा हारा। यह भी किसी का तो पूत होगा। भावावेश में मैं तेज-तेज कदमों से परन्तु ने यहां बुरे व्यसनों से ग्रसित हो रहे हैं, लेखक इसी सामयिक चिंता को प्रभुत कहानी में मुखरित करने का प्रयास करते हैं,

"अरे, यह तो सचमुच गिर गया। दुपहर की तेज धूप, शराब का नशा और लूटा हारा। यह भी किसी का तो पूत होगा। भावावेश में मैं तेज-तेज कदमों से चलकर उसके पास गया। मेरे मन को एक शंका ने घेर लिया-कहीं मेरा प्रशांत तो ऐसे। अगले ही क्षण मन ने प्रतिवाद किया-नहीं, मेरा प्रशांत ऐसा नहीं हो सकता। मन ने फिर प्रतिक्रिया दी क्यों नहीं हो सकता? क्या इस युवक के माँ-बाप इसके यथार्थ के बारे में सोच सकते हैं?"[4]

संग्रह शीर्षक कहानी 'पिघलते हिमखण्ड' मोहग्रस्तता के दुष्परिणाम की ओर संकेत करती है। रणजीत का अस्वाभाविक व्यवहार माता द्वारा अनुचित बातों को प्रश्रय देने का परिणाम है। सामान्य से कथानक में पिता अपने पुत्र से अलग होकर दूर चला जाता है, परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् पुत्र के प्रति कठोरता के हिमखण्ड पिघलने लगते हैं।"तीनों बच्चे अजनबी से उसे टकुर-टकुर देख रहे थे। राधे के हृदय के हिमखण्ड पिघलने लगे।"[5]

भारतीय समाज पितृ सत्तात्मक समाज है। पुत्र का आकर्षण आज भी भारतीय समाज में विद्यमान है। प्रस्तुत कहानी 'कतार की बीवी' का कथानक भी इन्हीं बातों से चुना गया है, सईदा ने अपने आँसू पोंछे और वह सुखवीर के बिस्तर के पास नीचे बैठ गई। वह बताने लगी, "बाबा, मेरे एक नहीं तीन-तीन रोग बेटियाँ हैं। अल्लाह ताला ने मुझे एक भी बेटा नहीं बख्शा।"[6]

'आस्थाओं का बहुपाश' कहानी स्त्री-पुरुष प्रेम की अभिव्यक्ति की कहानी है,"काकी माँ। सात फेरों के साथ मेरे बंशीधर को अपना स्वामी मानकर मैं सदा के लिए उनकी हो गई हूँ। मेरे अंतर में आस्था का दीप जल रहा है। उनकी स्मृति की चिरंतन लौ मेरे अन्तस् को चन्नण किये है। मन में जोत तो बहुत पहले जल चुकी है। वहाँ और कोई दीया नहीं जल सकता।"[7]

'ढहती हुई दीवार' कहानी मूलतः संबंधों में बाधक बने अहं के विसर्जन की कहानी है। भूषणजी आगे कुछ कहते -"उससे पहले ही रागिनी ने अपने हाथ की अंगुलियाँ उनके ओष्ठों पर रख दी थी। उनके बीच अहं की दीवार ढह रही थी। आज दोनों के व्यवहार में अद्भुत सम्मोहन था। एक रसता में डूबे भूषणजी को उनके अपने लेख 'हम सब एक हैं' के सार्थक होते शब्द शकुन दे रहे थे।"[8]

प्रस्तुत कहानी पुरुष अहम् के विसर्जन की कहानी है। 'डीह से बंधे पैर' रत्ना नामक पात्र के इर्द गिर्द बुनी गई है। स्त्री शोषण को प्रस्तुत कहानी में रूपायित किया गया है। स्त्री का अन्ततः आसरा उसका पति है। लाख जुल्म हों लेकिन वह अपने पत्नी को छोड़कर जा पाने में असमर्थ महसूस करती है, उसके पैर पुनः अपने पति के घर की ओर लौट पड़ते हैं, रत्ना रोने लगी, "मौसी। रात दारू पीकर मेरा आदमी रिक्शा जुए में हार आया। मैंने तनिक कुछ कहा तो मुझे जानवरों की तरह मारने लगा।"[9]

मेहता जी रत्ना की सजल आंखों को देख रहे थे। उन्हें लगा, "रत्ना के पैर एक कच्ची डीह से बंधे हैं। वह आधार तलाशती है कि डीह टूट जाती है। वह गिरती-पड़ती लुढ़कती नीचे तक जाती है। फिर जैसे-तैसे डीह तक आती है कि फिर डीह टूट जाती है। और, रत्ना है कि वह कभी कच्ची डीह को नहीं छोड़ सकती।"[10]

'पगथलियाँ' आतंकग्रस्त त्रिपुरा अंचल की कहानी है। प्रस्तुत कहानी गरीबी रेखा के नीचे जीने वाले लोगों की अभावग्रस्त जिन्दगी का कच्चा चिट्ठा है। भौमिक और मणि अपने यथार्थ को पहचान चुके हैं, अतः वे झूठे सपने नहीं देखना चाहते हैं, धीरे-धीरे छटती भीड के साथ मणि भी खिसक गई। घर आकर अपने पति के पाँवों पर माथा टेककर वह फूट पड़ी। भौमिक की पगथलियां आँसुओं से अच्छी तरह भीग गई तो उसकी नींद टूटी। बोला, 'मणि माफ करना। मैंने एक भयानक सपना देखा था।"[11]

'मानुषभक्षी' कहानी शोषण पर आधारित कहानी है। वर्तमान व्यवस्था में मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर गुजरता है। यह कहानी भारतीय समाज की अनेक विसंगतियों को सहज रूप से बपर्दा कर देती है-एक लम्बी-सी घूंट लेकर सरपंच ने अपनी जेब से दस हजार की गड्डी निकालते हुए कहा, "थानेदार, मैंने दस हजार कुँवरी की बात दबाने को दिये थे। ये दस हजार पेशगी है-सबूत मिटाने के। बाकी काम होने पर मैं आपको खुश कर दूंगा।" रुपयों

को अपनी जेब में डालते हुए थानेदार ने कहा, "ठीक है, मैं रूपकुंवरी और उसके घरवालों की जुबान हमेशा के लिए बंद कर दूंगा। परन्तु तुम्हें एक काम करना होगा।"

"क्या?" फतेहसिंह ने पूछा।

"कल रात तुम्हारे टीके की रस्म का सामान और कुँवरबाई के गहने चुपके से खडकसिंह के घर रखवा कर थाने में चोरी की रिपोर्ट करवा देना। बाकी मैं देख लूंगा।" गजेन्द्रसिंह ज्यादा नहीं सुन सका। वह लौटकर अपनी माँ के पास आया। व्यवस्था के कुचक्र से लड़ने की हिम्मत उनमें नहीं थी। पाँच प्राणियों के बीच मन के रिश्ते थे। गजेन्द्रसिंह और रूपकुँवरी ने मन के फेरे लिए और वे रात के अंधेरे में ही उस गाँव से खिसक गए। खड़कसिंह और राजकुमारी सूनी आँखों अंधेरे को देख रहे थे। मानुषभक्षी के आतंक से भयभीत दोनों ने एक साथ कहा, "चलो, जंगल से आदमियों की किसी बस्ती में चलें।"[12]

'रिश्ते का दर्द' सामान्य कथानक पर आधारित कहानी है। अमानुषी कहानी स्त्री के द्वारा पति को छोड़कर अन्य पुरुष के साथ विवाह करने के कथानक पर आधारित है। अन्ततः उसे अपनी गलती का अहसास होता है, वह स्वयं कहती है-आमि अमानुषी। 'तलाश' कहानी प्रेम में धोखा खाए व्यक्ति की कहानी है। पुष्पा और नितीन दोनों युवा हैं। नितीन पुष्पा की आर्थिक सहायता करता है परन्तु अन्त में पुष्पा नितीन को छोड़कर आस्ट्रेलिया चली जाती है और फिर अंत में वह, "और फिर अपनी स्मृतियों के तलछट में अकेलेपन की चाहत, यौनाकर्षण और प्यार जैसे शब्दों के अर्थ तलाशने की कोशिश करता है।"[13]

'गुलिस्तां' कहानी विभाजन की त्रासदी की कहानी है, जिसमें अपनी जन्मभूमि को छोडने का दर्द है। "बेटे, जान पर आ पड़ी तो नमस्कार कर चले दिये थे अपनी जन्मभूमि को, अपने गुलिस्तां को, अपने घर-आंगन को। उस समय तू मात्र दो वर्ष का शिशु था, इसलिए कुछ नहीं जानता था-जन्मभूमि मोह, अपने घर-आँगन का मोह, अपने अड़ौसी-पड़ौसी का मोह क्या होता है?"[14]

'आजाद परिन्दे की छितरी हुई पांखें' कहानी में पक्षियों के माध्यम से स्वतंत्रता के मूल्य को प्रतिपादित किया है। साथ ही पर्यावरण पर हो रहे कुठाराघात के प्रति चिन्ता का भाव व्यक्त किया है, पर, आज? पहाड़ नंगा हो रहा है। नित-प्रतिदिन पेड़ कट रहे हैं। वर्षा का पानी बिन रोक-टोक गति से बहता हुआ अपने साथ पहाड़ों की मिट्टी बहा ले जाता है। शिलाखण्ड अलग-अलग दिखाई देने लगे हैं। शिलाखण्डों के बीच दरारें बढ़ रही हैं। ऐसे में प्रस्तर स्खलन तो होगा ही।"[15] पोपू ने आंखें खोलीं। सुलोचना की ओर एक बार देखा और फुर्र से उड़ गया। वह देखती रही- पोपू उड़ा जा रहा था। शायद गढ़वाल के पहाड़ों की ओर। आजाद परिन्दे की छितरी हुई पांखें उसे बहुत अच्छी लग रही थीं। 'खटाव' कहानी अन्य कहानियों की अपेक्षा लम्बी कहानी है। इसमें सहनशीलता के भाव को महत्त्व दिया गया है,"मेरे देवता! थे वो सै पचा गया। कदै किणी सूं जिकरो तक नीं। मूं सूं भी नीं। मेरे मालिक ! ऐड़ो खटाव। सगली पीड़ अकेला ई पी गया। मैंने दुनिया रे सामी नागी होवण सूं बचाग्या।"[16] ''और दरवाजा खुल गया कहानी किराएदार और मकान मालिक के पारस्परिक संबंधों के ताने-बाने से बुनी गई कहानी है, हमें आज लगा था कि हम सब यहां रह रहे थे। यह एक क्रम की शुरुआत थी। मुझे याद नहीं पड़ता कि उस दिन के बाद मकान मालकिन ने कभी अपने पिछवाड़े के दरवाजे को चिटखनी लगाई हो। वह दरवाजा हमेशा के लिए खुल गया था।"[17]

'दाएँ हाथ का अंगूठा' व 'रिश्ते की डोर' सामान्य कथानक पर आधारित कहानियाँ हैं। प्रत्येक कहानी जीवन प्रसंगों को लेकर लिखी गई है। कहानियों का कथानक सामाजिक दृष्टिकोण से युक्त है। राजनीति एवं अन्य पक्षों का चित्रण न के बराबर है। लेखक ने जनजीवन एवं परिवेश से संबंधित आम आदमी की संवेदना को कहानी के कथ्य के रूप में स्वीकार किया। अपनी सामर्थ्य एवं सृजनशीलता के बरअक्स उन्होंने कहानियों का सृजन किया है जो अपने कथ्य सम्प्रेषण में प्रभावी एवं सफल बन पड़ी है। 'धरती एक कॉस्मोज हरदान हर्ष का दस वर्ष पश्चात् प्रकाशित द्वितीय कहानी संग्रह है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियां सामयिक जीवन के विविध संदर्भों को लेकर रची गई हैं। कहानी संग्रह के बारे में फ्लैप पर संक्षिप्त टिप्पणी दी गई है जो संग्रह की कहानियों के संबंध में एक दृष्टि का निर्माण करती है,'धरती एक कॉस्मोज में कहानी संग्रह की कहानियां पाठक को आज के खुरदरे यथार्थ की समसामयिक समस्याओं से रू-ब-रू कराती है। यत्र-तत्र इन कहानियों को पढ़कर लेखक का जो बिम्ब बनता है, संग्रह की कहानियां उसमें और भी अधिक जोड़कर एक अलग दुनिया से साक्षात्कार कराती हैं, जो भिन्न गंध की कहानियां हैं।

इस संग्रह की प्रत्येक कहानी का अपना क्षितिज है, अपना आयाम है और अपना शैलीगत मुहावरा है। लेखक की कहानियां आत्मबोध से होती हुई मानवीय संवेदनाओं और जिजीविषा को अभिव्यक्त करती है। इन कहानियों में ऐतिहासिक सत्य की पहचान करते हुए विश्व-दृष्टि की ओर प्रयाण का सार्थक प्रयास दिखता है। इनकी कहानियां परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए पाठक को वस्तुस्थिति से अवगत कराती हैं और शाश्वत मूल्यों को उकेरता कथाकार सामन्तवाद के विरुद्ध खड़ा नजर आता है।

इस संग्रह की कहानियां घर, परिवार, पड़ोस, गांव, शहर सम्बन्ध, अलगाव तथा समसामयिक और अतीत से पाठकों को बखूबी साक्षात्कार कराती हैं। ये कहानियां संवेदनशील, मार्मिक एवं यथार्थपरक हैं जो मन को गहरे तक छू जाती हैं। कहानियों की भाषा शैली, भावों की उत्कृष्टता, घटनाओं के प्रस्तुतीकरण की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति कहानियों को हृदयग्राही और मर्मस्पर्शी बनाती हैं। लेखक की सोद्देश्य कहानियों की काव्यमय भाषा इन्हें रोचक और पठनीय बनाती हैं।"[18]

प्रस्तुत संग्रह में सोलह कहानियाँ हैं, जिनमें हैं- सरपंची, चिणाव क्षेत्र, आदमी का नाम, मुर्दार, पगरखी, धरती एक कॉस्मोज में आदि। प्रस्तुत कहानी में विविधता के दर्शन होते हैं। लेखक ने 'सरपंची' कहानी के माध्यम से नगरीय जीवन की अपेक्षा ग्रामीण जीवन की महत्ता को रेखांकित करने का प्रयास किया है। माँ का कथन इस संदर्भ में प्रासंगिक है,"बेटा गाँव में एकेलोपन नीं होवे। वठै मेरा रिस्तां री नाल गाँव-गलियाँ ही नीं, पूरै चौखले में है। सै रिस्ता नाता, खेत-खलिहान, हवा-पानी म्हनैं गाँव वापस बुला रह्या हैं। बस तू अर बीनणी बीच-बीच में बार-त्योहार घर-गाँव आकर सम्भालते रहना। अपनी राजी-खुशी का समाचार देते रहना।"[19]

इसी कहानी में भ्रष्ट एवं गंदी राजनीति का भी पर्दाफाश किया गया है जो निम्न पंक्तियों से स्पष्ट हो रहा है-गाँव की राजनीति में ध्रुवीकरण में निर्णायक हैं बुनकरों के साठ घर, खातियों के पाँच घर, नाइयों के तीन घर, कुम्हारों के चार घर, मेहतरों के दो घर अर नत्थू डाकोत का एक घर। गाँव की राजनीति की चौपड़ में मामा शकुनी के छल-बल के दाँव इन्हीं कच्चे घरों में चलते हैं जो चौराहे के नीचे एक ओर दक्षिण में अलग-थलग घेरों में बसे हैं। काश्तगारों की रूड़ियों के पार। सामन्ती गाँव में सभी भूमिहीन। पुश्तैनी धन्धों से रोटी के जुगाड़ में अपने जुजमानों की मेहर पर गुजर-बसर करते आधुनिकता की दौड़ में।"[20]

लेखक ने आर्थिक विसंगति की ओर भी पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है-विनोद ने जोड़ा, "भाई सा' सत्ता की बातें छोड़ो। आज अपने मौहल्ले में कई घरों में चूल्हा तक नहीं जला होगा। नाथी बेवा है। न कोई ज़मीन, न कोई मजदूरी, धंधा। पेट की आग के लिए सरपंच हरपाल सिंह की जी-हुजूरी करने के सिवाय उसके पास क्या चारा है? विकल्प विहीन सोनाराम बलबीर सिंह की मदद से अपने बच्चों का पेट पाल रहा है। इसी तरह हर कोई कमजोर बेल की तरह किसी-न-किसी सहारे अपना गुजर-बसर कर रहा है। क्या रोजी-रोटी को मोहताज व्यक्ति सत्ता की लड़ाई लड़ सकता है?"[21]

इसी संग्रह में 'चिणाव क्षेत्र' कहानी में राजनीति के यथार्थ को उद्घाटित किया गया है। सचिव के मन की कटुता बढ़ती जा रही थी। उसे लगा-सरपंच शोषण रूपी पेड़ की मूल जड़ है। पाँचू पंच जैसे लोग उसकी सहायक जड़। और, दीन-हीन जनजाति के फलते-फूलते शोषण के वटवृक्ष की छाँह में मरियल तृणमय घास।"[22] इसी क्रम में यह उदाहरण प्रासंगिक है-

"पाँचू अब तुम मेरे आदमी हुए। और, मैं तुम्हारा। अब इस सरपंच को हटाकर उसकी जगह मुझको देव थरपना होगा। फिर, देखना अपने गठजोड़ से गाँव में अपनी ही दुकान चलेगी। तुम पंच से सरपंच बनोगे और मैं सरपंच से विधायक ..... अगले माह मेरे रिटायरमेन्ट के बाद मेरा चुनाव क्षेत्र यही होगा।"[23] 'आदमी का नाम' कहानी राजनीति के यथार्थ के साथ स्त्री-विमर्श को अभिव्यक्त करने वाली कहानी है-"नणदी, मैं भी एक औरत हूं। तुम्हारी भावनाओं को समझती हूं। मैंने तुम्हारे भाई से कहा था कि अपनी बहिन-बेटियों से वणकर बस्ती की बहुओं के वोट इस तरह गिरवाना नाजायज है। गाँव में बात खड़ी होगी। क्या इससे अपनी बहिन-बेटियों की आत्मा मलिन नहीं होती?"[24]

"फिर?" "फिर क्या? हँसते-हँसते कह दिया- प्रेम और राजनीति में सब जायज है।" "भाभी! प्रेम और राजनीति ही क्यों? सब जगह, मर्द जो चाहे वह सब जायज है। वह चाहे जिसकी हमें औरत बना दे, वह चाहे तो हमें कहीं भी दाँव पर लगा दे। धर्मराज जुधिष्ठर की तरां।[25]

'चर-भर' कहानी स्त्री शोषण को बयां करती है, उदय के लिए मैं रोटी थी। भूख मिटाने का जरिया। कितनी ऊँच-नीच रही है उसकी। घर की इज्जत के नाम पर मैं सब ढापती रही। कितने व्यसन हैं उसके। निभाने के नाम पर मैं हर कदम समझौते करती रही। बेबस । लाचार। आँख में मैल। जब मैं अपना दुःखड़ा माँ के सामने रोती तो वह कहती, "बेटी, इब के। बिंधग्या सो मोती। बस, निभा। देख भाग पलटैगो। मक्खन अर सोनू नै पढ़ा। वां नै इंजीनेर अर डाकदर बणा।"[26]

सोनम नयी सोच की स्त्री है, मैं जानती हूं-सोनम अपने आत्मविश्वास से समझौता करने वाली नहीं, पढ़ने में वह अव्वल रही। बी.ई. के अपने बैच में वार्षिक दस लाख रुपये का पैकेज पाने वाली। वह चाहती है उसका जीवनसाथी उसका ध्यान रखे। उसे प्यार करे, पर चिपकू नहीं। वह पति कम दोस्त ज्यादा हो। अपने कैरियर के साथ-साथ उसे भी अपना समय दे। हाँ, डोमिनेट करने की कोशिश नहीं करे। व्यवहार में ईमानदार हो। और, सभी तरह के व्यसनों से दूर।"[27]

'मोहब्बत एक कहानी' सामान्य कथानक पर बुनी गई है। इसमें आत्मिक प्रेम की अभिव्यंजना की गई है, नेपाली बाबू ने एक तस्वीर निकाली। बलदेव के हाथों में थमाते हुए उसने कहा, "यह है शीला। तब से आज तक इसी रूप में। इसी अवस्था में। लगता है, प्यार के शाश्वत स्वरूप में कभी न रूप बदलता है और न अवस्था। यह एक आन्तरिक प्रवाह है-नदी के निर्मल जल की धार की तरह।"[28]

'मुँह दिखाई' दलित विमर्श को व्यंजित करने वाली कहानी है। गाँव में दलित वधू मुँह दिखाई के लिए सवर्णों के घर जाती है। दलित चेतना के परिणामस्वरूप उनमें इस प्रथा के प्रति विद्रोह का भाव जाग्रत होता है,"भाई चेतराम, सैद्धान्तिक तौर पर मैं यह जानता था कि हमारे यहां सवर्णों द्वारा दूल्हे को घोड़ी पर न बैठने देना, हँसी-खुशी के मौकों पर बाजा न बजने देना, वर-वधू को घर तक सीधे वाहन से न आने देना हमारे मानवीय और संवैधानिक अधिकारों का हनन है। हमारे साथ अन्याय है। इस पीड़ा की अनुभूति मुझे अपनी शादी में हुई। पुराने जूते की कील आज चुभी। मैंने अपनी बेबसी को उस समय अनुभव किया जब मैं तुम्हारी भाभी के साथ बस से चौराहे पर उतर रहा था। तब से अब तक मैं बराबर आत्म मंथन कर रहा हूं। हमारे ऊपर सवर्णों के अत्याचार में हम भी बराबर के दोषी हैं।"[29]

'मुर्दार' कहानी में स्त्री के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया गया है। अरूप का कथन,"बंधु, आज यह माना जाता है कि नारी सदियों से वंचिता रही है। पुरुष द्वारा निर्मित समाज में उसका शोषण होता रहा है। नारी उत्पीडन के खिलाफ पैरवी करना गलत नहीं है। उसके हक में खड़ी संस्थाओं के महत्त्व को भी नहीं नकारा जा सकता। मगर, उसके साथ-साथ क्या यह नहीं लगता कि नारी स्वातंत्र्य के नाम पर कुछ स्त्रियां पुरुषों का शोषण भी करती हैं, मर्यादाओं का हनन करती हैं। और, कुछ स्त्रियाँ उचित अनुचित तरीकों से अपने नारी होने का लाभ उठाती हैं।"[30]

कहानी में पारिवारिक विसंगति को दर्शाया गया है। आधुनिक परिवार में स्त्री द्वारा पुरुष की दयनीय दशा कर दी गई। उसकी जिन्दगी मुर्दार जैसी हो गई है,"हाँ, बंधु! एक ऐसा मुर्दार जो रोजी-रोटी के काम के साथ-साथ घर के सभी कामों में धकेल दिया गया। जब तक मैं उसे बैड टी नहीं देता, वह बिस्तर से नीचे पाँव भी नहीं रखती। उसके सिर दर्द के बहाने मैं ऑफिस जाने से पूर्व और आने के बाद रसोई में रमता गया। फिर, बच्चे हुए तो उनके लालन-पालन का अधिकार भार वह मुझ पर डालती गई। आखिर, मुझे अपने बच्चों के स्वस्थ विकास में सहायक होना ही था।"[31]

पति-पत्नी के परस्पर सहयोग से ही जीवन आनन्दमय-कल्याणमय हो सकता "अरूप, चिन्ता न कर। गृहस्थ के जुए में पति और पत्नी को बराबर जुतना होता है। किसी एक का जुतना उस पर भार भी है और उसका शोषण भी। न पति पत्नी को कहीं दबाये और न पत्नी पति को। दोनों मिलकर खुशी-खुशी गृहस्थ धर्म निभाएँ। इसमें ही आनन्द है और कल्याण भी।"[32] 'अन्तिमा' कहानी में स्त्रीगत संवेदना की सशक्त अभिव्यक्ति है। इसमें पति-पत्नी संबंधों में आए अलगाव के भाव को व्यंजित किया गया है-"खिड़की में बने आसन पर अन्तिम पैर समेट कर गुमसुम बैठ गई थी। काली रात के अंधेरे में वह अपने मन की चुभन के एहसास को जी रही थी। उसने अपनी हथेलियाँ आँखों के सामने बिछाईं। टिमटिमाते तारों की क्षीण रोशनी में उसके सुहाग की मेहंदी दृष्टिगत थी। अन्तिमा के मन में एक पीड़ा भरी अनुगूंज सुनाई दी, 'देखो, सुहाग की मेहंदी भी मैली न हुई और उसके दाम्पत्य जीवन में अभी से खटास आ गई।"[33] लेखक ने दहेज प्रथा को कथानक में बुना है। आज की स्त्री जाग्रत हो चुकी है। अन्तिमा अपने पिता को आश्वस्त करती है-घर पहुंच कर मैं अरविन्द को लिख दूंगी कि वह अपने माँ-बाप के बुढ़ापे का सम्बल सदैव रहेगी। जिस दिन उसमें पुरुषार्थ जग जाए और उसके अंदर का लालच रूपी कीड़ा मर जाए, उस दिन वह मुझे लेने आ जाए। मैं उसके साथ खुशी खुशी लौट जाऊँगी।"[34]

विधवा/वृद्ध समस्या पर आधारित 'आश्रय' कहानी है,"हां, बेटी! मैं तुम्हारी मनःस्थिति समझ सकती हूं। बेवक्त विधवा हुई औरत के प्रति हमारे समाज का नजरिया एक जैसा ही है। फिर क्या गरीबी की बस्ती और क्या अमीरों के बंगले। इस मामले में हम सब की स्थिति एक जैसी ही है।"[35]. यह पढ़कर आरती का उत्साह ठण्डा हो गया। वह मन ही मन कहने लगी, 'सुकान्त! तुम्हारा बेटा समझता है-मैं बुढ़ापे में यहां अकेली ठीक रहूँगी। वह रुपये भेजकर मातृ ऋण से उऋण हो रहा है। क्या मुझे बुढ़ापे में ढेर सारा रुपया चाहिए? अपनी देखभाल और घर के काम के लिए आत्मीय जनों की जगह आया चाहिए।"[36]

'उल्टी टोपी वाले' कहानी में आतंकवाद की ओर युवाओं के आकर्षित होने के मूल कारणों की खोज की गई है-"साहब, आप भले आदमी हैं। आपसे मैं कुछ नहीं छुपाऊँगा। आप जानते हैं मैं आवारा लड़कों में घूमता-फिरता हूं। छोटी-मोटी छिनताई और दादागीरी करता हूं। पर, यह सब मैं मजबूरी में करता हूं। अपनी आत्मा मारकर करता हूं।"

"जब तुम्हारी आत्मा नहीं मानती तो फिर तुम ऐसा क्यों करते हो?"

"साहब जी, इसका उत्तर बहुत पहले कॉर्ल मार्क्स ने दे दिया है।"

"किस तरह?" "आर्थिक विषमता।

देखिए साहब, मैंने बी. ए. किया। कहीं कोई रोजगार नहीं मिला। रोजी-रोटी के लिए दर-दर भटका। कई जगह की ठोकरें खाईं। असमय सिर से बाप का साया उठ गया। घर चलाने का भार मेरे कंधों पर आ गया। मैं मजदूरी तक करने को तैयार था, पर वह भी मुझे नहीं मिली।"[37] कहानी में डेका यानी उल्टी टोपी वाले का हृदय परिवर्तन दिखलाया गया है। वह आतंकवाद छोड़कर आम जिन्दगी जीने लगता है,दूसरे दिन मैं पारस अरोड़ा की साइट पर दस बजे पहुँचा तो डेका वहां मौजूद था। उसके सिर में उल्टी टोपी गायब थी। सलीके से कंघी किए बाल। सफाचट दाढ़ी। कतरी हुई छोटी-छोटी मूँछें। पूरी बाँह की इस्त्री की हुई साफ धुली शर्ट और उससे मैच करती स्लेटी रंग की पेंट। पैरों में स्लीपर की जगह आज मोजे और जूते थे। उसने हाथ जोड़कर कहा, "नमस्ते, साहब।"[38]

यह कहानी लेखक के व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर लिखी गई है। अब युवा आतंकवाद को त्यागकर अपनी खुद की खुशहाल जिन्दगी जी रहे थे,सिनामारा कॉलोनी में कोई उल्टी टोपी वाला नहीं रह गया था। कोई आवारा और मुफ्तखोर नहीं था। "डेका की दोनों बहिनों की शान-शौकत से शादी हो गई थी। जैसे भभकते दीपक में घी डालते ही वह जल उठता है, उसी तरह डेका, गोस्वामी, दत्ता जैसे बेरोजगार नवयुवकों को रोजगार से आर्थिक सम्बल मिलते ही उनका जीवन प्रकाशित हो उठा था। अधिकतर शादी के बंधन में बंध चुके थे।"[39]

'पगरखी' कहानी एक दीर्घ कहानी है। यह कहानी एक माँ का अपने बच्चों के प्रति वात्सल्य, भाई-बहिनों के बीच प्रेम को दर्शाती कहानी है, 'पगरखी' कहानी एक माँ का अपने बच्चों के प्रति वात्सल्य, भाई-बहिनों के बीच प्रेम को दर्शाती कहानी है। जब दो भाइयों में से माँ एक बेटे के पास रहने जाती है तो दूसरे बेटे में मन में खटास उत्पन्न होती है। उसे लगने लगता है कि वह माँ उससे प्यार नहीं करती है- "यदि माँ मुझे सबसे अधिक चाहती है तो फिर छोटे के पास शहर क्यों चली गई?"[40]

हरदान हर्ष की भाषा की विवेचना-विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि उनकी वाक्यगत योजना विविधतामयी है। उनके वाक्य संयोजन में मितव्ययता है। हरदान हर्ष ने कथ्यानुरूप व पात्रानुरूप वाक्य संयोजन किया है। जहां छोटे वाक्यों की जरूरत है वहां छोटे व संक्षिप्त वाक्य हैं, तो कथ्यानुरूप बड़े वाक्य की भी योजना की गई हैजिससे शिल्प सौंदर्य में प्रभावशीलता स्पष्ट परिलक्षित होती है। आधुनिक कहानी ने जिस जीवन यथार्थ को अपना कथ्य बनाया या यथार्थ के जिस रूप की अभिव्यक्ति से अपने को प्रतिबद्ध किया, कहानी की भाषा भी उसी मार्ग की अनुगामिनी बनी। यथार्थ से रू-ब-रू होती कहानी की भाषा में रोमान, काल्पनिकता का ऐन्द्रजालिक रूप और उससे अनुस्यूत उपमान, बिम्ब, प्रतीक विधान का अतिशय भावुकतापूर्ण आग्रह अब समाप्त प्रायः है।

निष्कर्ष स्वरुप हम यह सकते है कि समकालीन कथाकारों में हरदान हर्ष की एक विशिष्ट पहचान है। हर्ष जी ने अपनी रचनात्मक ऊर्जा का उपयोग अपने कथा साहित्य में किया है। हर्ष जी को भाषा अपनी रचनात्मक शक्ति के साथ कथा में प्राण फूंकती है। वाक्यों का चुटीलापन 'लघु संवाद' शीर्षक के अन्तर्गत लिए उदाहरणों से जाना जा सकता है। वाक्य विन्यास की विविधता भी इनमें परिलक्षित है। आधुनिक कहानीकार के रूप में हरदान हर्ष ने जिस जीवन यथार्थ को अपना कथ्य बनाया या यथार्थ के जिस रूप की अभिव्यक्ति से अपने को प्रतिबद्ध किया। उनके प्रभावी संवाद उनकी कहानियों के अविच्छिन्न अंग है। संवाद रचना की नीरसता को तोड़कर उसे सरस बनाते हैं।

**सन्दर्भ सूची**

1. मधुमती, सितम्बर, 2004, पृष्ठ संख्या 99
2. हरदान हर्ष, पिघलते हिमखण्ड, पृष्ठ संख्या 5
3. वही, पृष्ठ संख्या 14
4. वही, पृष्ठ संख्या 11
5. वही, पृष्ठ संख्या 27
6. वही, पृष्ठ संख्या 29
7. वही, पृष्ठ संख्या 40
8. वही, पृष्ठ संख्या 45
9. वही, पृष्ठ संख्या 49
10. वही, पृष्ठ संख्या 55
11. वही, पृष्ठ संख्या 61
12. वही, पृष्ठ संख्या 76
13. वही, पृष्ठ संख्या 77
14. वही, पृष्ठ संख्या 85
15. वही, पृष्ठ संख्या 85
16. वही, पृष्ठ संख्या 96
17. वही, पृष्ठ संख्या 103
18. हरदान हर्ष, धरती एक कॉस्मोज में, फ्लेप से
19. वही, पृष्ठ संख्या 1
20. वही, पृष्ठ संख्या 6
21. वही, पृष्ठ संख्या 14
22. वही, पृष्ठ संख्या पृ. 21
23. वही, पृष्ठ संख्या 21
24. वही, पृष्ठ संख्या 27
25. वही, पृष्ठ संख्या 30
26. वही, पृष्ठ संख्या 31
27. वही, पृष्ठ संख्या 39
28. वही, पृष्ठ संख्या 42
29. वही, पृष्ठ संख्या 50-51

30. वही, पृष्ठ संख्या 54
31. वही, पृष्ठ संख्या 56
32. वही, पृष्ठ संख्या 57
33. वही, पृष्ठ संख्या 62
34. वही, पृष्ठ संख्या 64
35. वही, पृष्ठ संख्या 68
36. वही, पृष्ठ संख्या 76-77
37. वही, पृष्ठ संख्या 78
38. वही, पृष्ठ संख्या 79
39. वही, पृष्ठ संख्या 80
40. वही, पृष्ठ संख्या 80